श्रावक प्रतिक्रमण

अनुवादक
सारस्वत कवि श्रमणाचार्य
विभवसागर मुनि

प्रकाशक
श्रमण श्रुत सेवा संस्थान
जयपुर एवं इन्दौर

❖ कृति : **श्रावक प्रतिक्रमण**

❖ शुभाशीष : प.पू.गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज

❖ अनुवादक : सारस्वत कवि, श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

❖ प्रकाशन प्रेरणा : क्षु. ह्रीं श्री माताजी, क्षु. सिद्धश्री माता जी

❖ संकलन : श्रमण शुद्धोपयोग सागर

❖ संपादन : श्रमण शुद्धात्म सागर

❖ प्रकाशक : श्रमण श्रुतसेवा संस्थान, जयपुर एवं इन्दौर

❖ संस्करण : प्रथम, वर्ष-2021

❖ प्रतियाँ : 1100

❖ मूल्य : स्वाध्याय

❖ प्राप्ति स्थल : सौरभ जैन, जयपुर (राज.) 9829178749
टी.के.वेद, इन्दौर (म.प्र.) 9425154777
प्रतिपाल टोंग्या, इन्दौर (म.प्र.) 9302106984
सन्मति जैन, सागर (म.प्र.) 9425462997

❖ मुद्रक : विकास आफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र
गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)
फोन:0755-2601952, 425005624

''देहस्य सारं व्रत धारणं च''

मनुष्य देह की सफलता व्रत धारण करने में है। हिंस, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह इन पापों से निज आत्मा को हटा लेना व्रत है। व्रत के दो भेद है- देश व्रत, महाव्रत। श्रावक के स्थूल व्रत को देशव्रत तथा श्रमण द्वारा धारण किए गये पूर्ण व्रत को महाव्रत कहते हैं।

श्रावक के एकादश स्थान हैं जो अपनी पूर्व-पूर्व कक्षाओं को साथ लेकर आगे-आगे आत्म संयम के बढ़ते क्रम की सूचक हैं जिन्हें प्रतिमा शब्द से संबोधित किया जाता है।

पहली दर्शन प्रतिमा, दूसरी व्रत प्रतिमा के अन्तर्गत बारह व्रत तथा सम्यग्दर्शन और सल्लेखना समाहित हैं। प्रत्येक के पाँच-पाँच अतिचार गिनाये हैं- 12X5=60 अतिचार हुए, सम्यग्दर्शन के 5 सल्लेखना के 5=70 अतिचार हुए। शेष प्रतिमाओं के भी अतिचारों का उल्लेख यथा स्थान इसी प्रतिक्रमण में किया है।

साधक के लिए प्रतिदिन अपने व्रतों के गुण दोषों का विचार कर, दोषों को दूर करना चाहिए। यह दोष निराकरण की प्राचीन आर्ष प्राणाली प्रतिक्रमण कहलाती है।

जैसे वैद्य दवा के द्वारा रोग को हर लेता है। मान्त्रिक मन्त्र द्वारा, तान्त्रिक तन्त्र द्वारा, रोग का निराकरण कर देता है, उसी तरह साधक प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा, आलोचना के माध्यम से अपने दोषों को दूर कर पवित्रात्मा होता है।

अत: इस किताब में श्रावक के प्राकृत प्रतिक्रमण के साथ हिन्दी भाषा अनुदूत वही प्रतिक्रमण मेरे द्वारा प्रस्तुत है।

श्रमणाचार्य विभवसागर

पुण्यार्जक

श्रावक प्रतिक्रमण

(प्राकृत + संस्कृत)

श्रावक प्रतिक्रमण

जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराः प्रदोषाः,
यस्मात्-प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति।
तस्मात्-तदर्थ-ममलं गृहि-बोधनार्थं,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्म-विशोधनार्थम् ॥१॥

पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना,
रागद्वेष-मलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम्।
त्रैलोक्याधिपते! जिनेन्द्र! भवतः, श्रीपाद-मूलेऽधुना,
निन्दा-पूर्व-महं जहामि सततं, वर्वर्तिषुः सत्पथे ॥२॥

खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मेत्ती मे सव्वभूदेसु, वैरं मज्झं ण केणवि ॥३॥

राग-बंध-पदोसं च, हरिसं दीण-भावयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोस्सरे ॥४॥

हा! दुट्ठ-कयं हा! दुट्ठ-चिंतियं भासियं च हा! दुट्ठं।
अंतो अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो ॥५॥

दव्वे खेत्ते काले, भावे य कदाऽवराह-सोहणयं।
णिंदणगरहण-जुत्तो,मणवयकाएणपडिक्कमणं ॥६॥

एइंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया पुढविकाइया-आउकाइया-तेउकाइया-वाउकाइया-वणप्फदिकाइया तसकाइया एदेसिं उद्दावणं परिदावणं

विराहणं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

दंसण-वयसामाइय-,पोसहसचित्तराइभत्ते य।
बंभारंभ-परिग्गह- अणुमणमुद्दिट्ठ-देसविरदे य॥

एयासु जहाकहिद-पडिमासु पमादाइकयाइचार-सोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं।

अरहंतसिद्धआयरियउवज्झायसव्वसाहुसक्खियं, सम्मत्तपुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसिओ (राइओ) पडिक्कमणाए सव्वाइचार-विसोहि-णिमित्तं पुव्वाइरिय-कमेण आलोयण-सिद्ध-भत्ति-काउस्सग्गं करेमि।

सामायिक दण्डक

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा - अरहंते लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो समुद्देसु पण्णारस-कम्म-भूमिसु, जावअरहंताणं, भयवंताणं आदियराणं, तित्थय-राणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतयडाणं पार-गयाणं, धम्माइरि-याणं, धम्मदेसयाणं, धम्मणायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्क-वट्टीणं, देवाहि-देवाणं, णाणाणं दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं।

कित्तिय वंदिय महिया, एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं, दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥७॥

चंदेहिं णिम्मल-यरा, आइच्चेहिं अहिय-पयासंता।
सायरमिव गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥८॥

श्रीमते वर्धमानाय, नमो नमित-विद्विषे।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा, त्रैलोक्यं गोष्पदायते ॥१॥

तव-सिद्धे णय-सिद्धे, संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥२॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं, अट्ठविहकम्म -विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढ-लोए-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं, अदीदाणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूज्जेमि,

वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

आलोचना

इच्छामि भंते! देवसिओ (राइयो) आलोचेउं तत्थ –

दर्शनप्रतिमा

पंचुंबर सहियाइं, सत्तवि वसणाइं जो विवज्जेइ।
सम्मत्तविसुद्धमई, सो दंसणसावओ भणिओ ॥१॥

व्रत-प्रतिमा

पंच य अणुव्वयाइं, गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि।
सिक्खावयाइं चत्तारि, जाण विदियम्मि ठाणम्मि ॥२॥

सामायिक-प्रतिमा

जिणवयण-धम्मचेइय,-परमेट्ठि-जिणयालयाण णिच्चंपि।
जं वंदणं तिआलं, कीरइ सामाइयं तं खु॥३॥

प्रोषधोपवास-प्रतिमा

उत्तम-मज्झ-जहण्णं, तिविहं पोसहविहाणमुद्दिट्ठं।
सगसत्तीए मासम्मि, चउसु पव्वेसु कायव्वं ॥४॥

सचित्तत्याग-प्रतिमा

जं वज्जिजदि हरिदं, तय-पत्त-पवाल-कंदफल-वीयं।
अप्पासुगं च सलिलं, सचित्तणिव्वत्तिमं ठाणं ॥५॥

दिवामैथुनत्याग (रात्ति-भोजन त्याग) प्रतिमा

मण-वयण-काय-कद-,कारिदाणुमोदेहिं मेहुणं णवधा।
दिवसम्मि जो विवज्जदि, गुणम्मि जो सावओ छट्ठो ॥६॥

ब्रह्मचार्य-प्रतिमा

पुव्वुत्तणव-विहाणं पि, मेहुणं सव्वदा विवज्जंतो।
इत्थिकहादि-णिवित्ती, सत्तमगुणबंभचारी सो ॥७॥

आरम्भत्याग-प्रतिमा

जं किं पि गिहारंभं, बहुथोवं वा सया विवज्जेदि।
आरंभणिवित्तमदी, सो अट्ठम सावओ भणिओ ॥८॥

परिग्रहत्याग-प्रतिमा

मोत्तूण वत्थमित्तं, परिग्गहं जो विवज्जदे सेसं।
तत्थवि मुच्छं ण करेदि,वियाण सो सावओ णवमो ॥९॥

अनुमतित्याग-प्रतिमा

पुट्ठो वापुट्ठो वा, णियगेहिं परेहिं सग्गिह-कज्जे।
अणुमणणंजोणकुणदि,वियाणसो सावओ दसमो ॥१०॥

उद्दिष्टत्याग-प्रतिमा

णवकोडीसु विसुद्धं, भिक्खायरणेण भुंजदे भुंजं।
जायणरहियं जोग्गं, एयारस-सावओ सो दु ॥११॥
एयारसम्मि ठाणे, उक्किट्ठो सावओ हवई दुविहो।
वत्थेय-धरो पढमो, कोवीण-परिग्गहो विदिओ ॥१२॥
तव-वय-णियमावासय-, लोचं कारेदि पिच्छ गिण्हेदि।
अणुवेहा-धम्मझाणं, करपत्ते एय ठाणम्मि ॥१३॥

इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो तस्स भंते ! पडिक्कमामि पडिक्कमं तस्स मे सम्मत्तमरणं, समाहिमरणं, पंडियमरणं, वीरियमरणं, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

दंसण-वय-सामाइय-,पोसह-सचित्त-रायभत्तेय।
बंभारंभ-परिग्गह-, अणुमणमुद्दिट्ठदेसविरदेदे ॥१॥

एयासु जधा-कहिद-पडिमासु पमादाइ-कयाइचार-सोहणं छेदोवट्ठावणं होउ मज्झं।

अरहंतसिद्धआयरिय उवज्झाय सव्वसाहू सक्खियं सम्मतपुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु मे भवदु मे भवदु।

अथ देवसियो (राइयो) पडिक्कमाए सव्वाईचार विसोहिणिमित्तं पुव्वाइरियकमेण पडिक्कमणभक्ति कायोत्सर्गं करोमि।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा - अरहंते लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं

पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो समुद्देसु पण्णारस-कम्म-भूमिसु, जावअरहंताणं, भयवंताणं आदियराणं, तित्थय-राणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतयडाणं पार-गयाणं, धम्माइरि-याणं, धम्मदेसयाणं, धम्मणायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्क-वट्टीणं, देवाहि-देवाणं, णाणाणं दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं।

करेमि भंते! सामाइयं सव्वं सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचसा काएण, ण करेमि ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं,जाव अरहंताणं भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

चतुर्विंशतिस्तवः

जीविय मरणे लाहा, लाहे संजोग विप्पजोगे य।
बंधुरिए सुह दुक्खा, दो समदा सामाइयं णाम॥
थोस्सामि हं जिणवरे, तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए, विहुय-रयमले महप्पण्णे ॥१॥

लोयस्सुज्जोय-यरे, धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से, चउवीसं चेव केवलिणो ॥२॥
उसहमजियं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥३॥
सुविहिं च पुप्फयंतं, सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमल-मणंतं भयवं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥४॥
कुंथुं च जिणवरिंदं, अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदामि रिट्ठ-णेमिं, तह पासं वड्ढमाणं च ॥५॥
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमलापहीण-जरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥६॥
कित्तिय वंदिय महिया, एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं, दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥७॥
चंदेहिं णिम्मल-यरा, आइच्चेहिं अहिय-पयासंता।
सायरमिव गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥८॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

णमो जिणाणं, णमो जिणाणं, णमो जिणाणं, णमो णिस्सिहीए, णमो णिस्सिहीए, णमो णिस्सिहीए, णमोत्थु दे, णमोत्थु दे, णमोत्थु दे, अरहंत! सिद्ध! बुद्ध! णीरय ! णिम्मल! सममण ! सुभमण! सुसमत्थ ! समजोग! समभाव! सल्लघट्टाणं! सल्लघत्ताणं! णिब्भय! णीराय ! णिद्दोस! णिम्मोह! णिम्मम! णिस्संग! णिस्सल्ल! माणमायमोसमूरण, तवप्पहावण, गुणरयण, सीलसायर, अणंत, अप्पमेय, महदि-महावीर-वड्ढमाण, बुद्धिरिसिणो चेदि णमोत्थु दे णमोत्थु दे णमोत्थु दे।

मम मंगलं अरहंता य, सिद्धा य, बुद्धा य, जिणा य, केवलिणो, ओहिणाणिणो, मणपज्जय-णाणिणो, चउदस-पुव्वगामिणो, सुदसमिदि-समिद्धा य, तवो य, वारसविहो तवसी, गुणाय, गुणवंतो य, महरिसी तित्थं तित्थकरा य, पवयणं पवयणी य, णाणं णाणी य, दंसणं दंसणी य, संजमो संजदा य, विणओ विणदा य, बंभचेरवासो, बंभचारी य, गुत्तीओ, चेव गुत्तिमंतो य, मुत्तिओ चेव मुत्तिमंतो य, समिदीओ, चेव समिदि मंतो य, सुसमय-परसमय-विदु, खंति खंतिवंतो य, खवगा य, खीणमोहा य खीणवंतोय, बोहिय बुद्धाय, बुद्धिमंतो य, चेइय-रुक्खाय चेइयाणि।

उड्ढ-मह-तिरियलोए, सिद्धायदणाणि णमंसामि, सिद्धि-णिसीहियाओ, अट्ठावय-पव्वये, सम्मेदे, उज्जंते, चंपाए, पावाए, मज्झिमाए, हत्थिवालियसहाए, जाओ अण्णाओ काओवि णिसीहियाओ जीवलोयम्मि इसिपब्भार-तलगयाणं सिद्धाणं बुद्धाणं कम्मचक्क-मुक्काणं णीरयाणं णिम्मलाणं गुरु-आइरिय-उवज्झायाणं पव्वतित्थेर-कुलयराणं चउवण्णो य समण-संघो य, दससु भरहेरावएसु पंचसु महाविदेहेसु जो लोए संति साहवो संजदा तवसी एदे मम मंगलं पवित्तं एदेहं मंगलं करेमि भावदो विसुद्धो सिरसा अहिवंदिऊण सिद्धे-काऊण अंजलिं मत्थयम्मि तिविहं तिरयणसुद्धो।

पडिक्कमामि भंते! दंसणपडिमाए, संकाए, कंखाए, विदिगिंच्छाए, परपासंड, पसंसणाए, पसंथुए, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो, अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए पढमे थूलयडे हिंसा-विरदिवदे-वहेण वा, बंधेण वा, छेएण वा, अइभारा-रोहणेण वा, अण्णपाणणिरोहणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-१॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए विदिए थूलयडे असच्चविरदिवदे-मिच्छोपदेसेण वा, रहोअब्भक्खाणेण वा, कूडलेहणाकरणेण वा, णासापहारेण वा सायारमंतभेएण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो, अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-२॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए तिदिये थूलयडे थेणविरदिवदे थेणपओगेण वा थेणहरियादाणेण वा, विरुद्धरज्जा-इक्कमणेण वा, हीणाहियमाणुम्माणेण वा, पडिरूवय ववहारेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो, अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा, समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-३॥

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए चउत्थे थूलयडे अबंभविरदि-वदे - परविवाहकरणेण वा, इत्तरियागमणेण वा, परिग्गहिदा-परिग्गहिदा-गमणेण वा, अणंगकीडणेण वा, कामतिव्वाभि-णिवेसेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-४॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए पंचमे थूलयडे परिग्गहपरिमाणवदे-खेत्तवत्थूणं परिमाणाइक्कमणेण वा, हरिण्ण-सुवण्णाणं परिमाणाइक्कमणेण वा धणधण्णाणं परिमाणा-इक्कमणेण वा, दासीदासाणं परिमाणा-इक्कमणेण वा, कुप्पभांडपरिमाणा-इक्कमणेण वा, जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-५॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए पढमे गुणव्वदे-उड्ढवइ-क्कमणेण वा, अहोवइक्कमणेण वा, तिरिय-वइक्कमणेण वा, खेत्तवड्ढिएण वा, अंतरा-धाणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-६-१॥

पडिक्कमामि भंते! वद पडिमाए विदिए गुणव्वदे:-आणयणेण वा, विणिजोगेण वा, सद्दाणुवाएण वा, रूवाणु-वाएण वा, पुग्गलखेवेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-७-२॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए तिदिए गुणव्वदे:- कंदप्पेण वा, कुकुवेएण वा, मोक्खरिएण वा, असमक्खियाहिकरणेण वा, भोगोपभोगाणत्थकेण वा जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-८-३॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए पढमे सिक्खावदे - फासिंदिय-भोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, रसणिंदिय भोगपरि- माणाइक्कमणेण वा, घाणिंदिय भोगपरिमाणा इक्कमणेण वा, चक्खिंदिय-भोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, सवणिंदिय भोग-परिमाणाइक्कमणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-९-१॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए विदियसिक्खावदे फासिंदिय-परिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा, रसणिंदिय परि-भोगपरिमाणा-इक्कमणेण वा, घाणिंदियपरिभोग-परिमाणा-इक्कमणेण वा, चक्खिंदिय-परिभोग -परिमाणा-इक्कमणेण वा, सवणिंदिय-परिभोग-परिमाण इक्कमणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा,

कारिदो वा, कीरंतो वा समणु-मण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-१०-२॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए तिदिए सिक्खावदे - सचित्त-णिक्खेवेण वा, सचित्त-पिहाणेण वा, पर-उवएसेण वा, काला-इक्कमणेण वा, मच्छरिएण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-११-३॥

पडिक्कमामि भंते! वदपडिमाए चउत्थे सिक्खावदे - जीविदा- संसणेण वा, मरणा-संसणेण वा, मित्ताणु-राएण वा, सुहाणुबंधेण वा, णिदाणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-१२-४॥

पडिक्कमामि भंते! सामाइयपडिमाए-मणदुप्पणिधाणेण वा, वायदुप्पणिधाणेण वा, कायदुप्पणिधाणेण वा, अणादरेण वा, सदि-अणुवट्ठावणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥३॥

पडिक्कमामि भंते! पोसहपडिमाए - अप्पडि-वेक्खिया-पमज्जियोसग्गेण वा, अप्पडिवेक्खियापमज्जि- यादाणेण वा, अप्पडिवेक्खियापज्जिया संथारो-वक्कम-णेण वा, आवस्सया-णादरेण वा, सदिअणुवट्ठा-वणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

पडिक्कमामि भंते! सचित्तविरदिपडिमाए- पुढवि-काइआ जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइआ जीवा असंखेज्जा- संखेज्जा, तेउकाइआ जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, वाउकाइआ जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइआ जीवा अणंता-णंता, हरिया, बीया, अंकुरा, छिण्णा भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥५॥

पडिक्कमामि भंते ! राइभत्तपडिमाए-णवविह-बंभचरियस्स दिवा जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥६॥

पडिक्कमामि भंते! बंभपडिमाए - इत्थिकहायत्तणेण वा, इत्थिमणोहरांगणिरक्खणेण वा, पुव्वरयाणुस्सरणेण वा, कामकोवण-रसासेवणेण वा, सरीरमंडणेण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥७॥

पडिक्कमामि भंते! आरंभविरदि-पडिमाए - कसाय-वसंगएण वा, जो मए देवसिओ (राइओ) आरम्भो, मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥८॥

पडिक्कमामि भंते! परिग्गहविरदि-पडिमाए - वत्थमेत्त-परिग्गहादो अवरम्मि परिग्गहे मुच्छापरिणामे जो मए देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥९॥

पडिक्कमामि भंते! अणुमणविरदिपडिमाए जं किं पि अणुमणणं पुट्ठापुट्ठेण कदं वा, कारिदं वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१०॥

पडिक्कमामि भंते! उद्दिट्ठ-विरदिपडिमाए उद्दिट्ठदोस-बहुलं अहोरदियं आहारयं वा आहारावियं वा आहारिज्जंतं वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥११॥

निर्ग्रन्थ पद की वांछा

इच्छामि भंते! इमं णिग्गंथं पवयणं अणुत्तरं केवलियं, पडिपुण्णं, णेगाइयं, सामाइयं, संसुद्धं, सल्लघट्टाणं, सल्लघत्ताणं, सिद्धिमग्गं, सेढिमग्गं, खंतिमग्गं, मुत्तिमग्गं, पमुत्तिमग्गं, मोक्खमग्गं, पमोक्खमग्गं, णिज्जाणमग्गं, णिव्वाणमग्गं, सव्वदुःखपरिहाणिमग्गं, सुचरियपरि-णिव्वाणमग्गं, अवितहं, अविसंति-पवयणं, उत्तमं तं सद्दहामि, तं पत्तियामि, तं रोचेमि, तं फासेमि, इदोत्तरं अण्णं णत्थि, ण भूदं, ण भविस्सदि, णाणेण वा, दंसणेण वा, चरित्तेण वा, सुत्तेण वा, इदो जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिणिव्वाण-यंति, सव्वदुक्खाण-मंतं करेंति, पडि-वियाणंति, समणोमि संजदोमि, उवरदोमि, उवसंतोमि, उवधि-णियडि-माण-माया-मोसमूरण-मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्तं च पडिविरदोमि, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तो, इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राइओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

इच्छामि भंते ! पडिकमणाइचारमालोचेउं जो मए देवसिओ (राइयो) अइचारो, अणाचारो, आभोगो, अणाभोगो, काइओ, वाइओ, माणसिओ, दुच्चरिओ, दुच्चारिओ, दुब्भासिओ, दुप्परिणामिओ, णाणे, दंसणे,

चरित्ते, सुत्ते, सामाइए, एयारसण्हं-पडिमाणं विराहणाए, अट्ठविहस्स कम्मस्स- णिग्घादणाए, अण्णहा उस्सासिदेण वा, णिस्सासिदेण वा, उम्मिस्सिदेण वा, णिम्मिस्सिदेण वा, खासिदेण वा, छिंकिदेण वा, जंभाइदेण वा, सुहुमेहिंअंग-चलाचलेहिं, दिट्ठि-चलाचलेहिं, एदेहिं सव्वेहिं, असमाहिं-पत्तेहिं, आयारेहिं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि, तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

दंसण-वय-सामाइय-, पोसहसचित्तराइभत्ते य।
बंभारंभपरिग्गह-,अणुमण-मुद्दिट्ठदेसविरदे दे॥1॥

एयासु जधा कहिद पडिमासु पमादाइ कयाइचार सोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं। अरहंत-सिद्ध-आयरिय-उवज्झाय-सव्वसाहु-सक्खियं, सम्मत्त-पुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसिओ (राइओ) पडिक्कमणाए सव्वाइचार विसोहिणिमित्तं,पुव्वाइरियकमेण निष्ठितकरणवीरभक्तिं कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा -

अरहंते लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो समुद्देसु पण्णारस-कम्म-भूमिसु, जावअरहंताणं, भयवंताणं आदियराणं, तित्थय-राणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतयडाणं पार-गयाणं, धम्माइरि-याणं, धम्मदेसयाणं, धम्मणायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्क-वट्टीणं, देवाहि-देवाणं, णाणाणं दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं।

करेमि भंते! सामाइयं सव्वं सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचसा काएण, ण करेमि ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि अप्पाणं,जाव अरहंताणं भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण हो तो छत्तीस बार णमोकार मंत्र का तथा रात्रि सम्बन्धी हो तो अठारह बार जाप करें।)

चतुर्विंशतिस्तवः

जीविय मरणे लाहा, लाहे संजोग विप्पजोगे य।
बंधुरिए सुह दुक्खा, दो समदा सामाइयं णाम॥
थोस्सामि हं जिणवरे, तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए, विहुय-रयमले महप्पण्णे ॥१॥
लोयस्सुज्जोय-यरे, धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से, चउवीसं चेव केवलिणो ॥२॥
उसहमजियं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥३॥
सुविहिं च पुप्फयंतं, सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमल-मणंतं भयवं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥४॥
कुंथुं च जिणवरिंदं, अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदामि रिट्ठ-णेमिं, तह पासं वड्ढमाणं च ॥५॥
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमलापहीण-जरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥६॥
कित्तिय वंदिय महिया, एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं, दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥७॥
चंदेहिं णिम्मल-यरा, आइच्चेहिं अहिय-पयासंता।
सायरमिव गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥८॥

वीर भक्ति

यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्, द्रव्याणि तेषां गुणान्,
पर्यायानपि भूत-भावि-भवतः, सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत् प्रतिक्षण-मतः, सर्वज्ञ इत्युच्यते,
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते, वीराय तस्मै नमः ॥१॥
वीरः सर्व-सुराऽसुरेन्द्र-महितो, वीरं बुधाः संश्रिता,
वीरेणाभिहतः स्व-कर्म-निचयो, वीराय भक्त्या नमः।
वीरात् तीर्थ-मिदं-प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्रीद्युतिकान्तिकीर्तिधृतयो,हे वीर! भद्रं त्वयि ॥२॥
येवीरपादौप्रणमन्तिनित्यं,ध्यानस्थिताःसंयम-योग-युक्ताः।
तेवीतशोकाहिभवन्ति लोके, संसारदुर्गं विषमं तरन्ति ॥३॥
व्रत-समुदय-मूलः संयम-स्कन्ध-बन्धो,
यम नियमपयोभिर्वर्धितः शील-शाखः।
समिति-कलिक-भारो गुप्ति-गुप्त-प्रवालो,
गुण-कुसुमसुगन्धिः सत्-तपश्चित्र-पत्रः ॥4॥
शिव-सुख-फलदायी यो दया-छाययौद्घः,
शुभजन-पथिकानां खेदनोदे समर्थः।
दुरित-रविज - तापं प्रापयन्नन्त-भावं,
स भव-विभव-हान्यै नोऽस्तु चारित्र-वृक्षः ॥5॥
चारित्रं सर्व-जिनैश्, चरितं प्रोक्तं च सर्व-शिष्येभ्यः।
प्रणमामि पञ्च-भेदं, पञ्चम-चारित्र-लाभाय ॥६॥

धर्मः सर्व-सुखाकरो हितकरो, धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिव-सुखं, धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भव-भृतां, धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं, हे धर्म, मां पालय ॥७॥

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ॥८॥

इच्छामि भंते! वीरभत्ति काउस्सग्गं करेमि तत्थ देसासिआ, असणासिआ ठाणासिआ कालासिआ मुद्दासिआ, काउसग्गासिआ पणमासिआ आवत्तासिआ पडिक्कमणाए तत्थसु आवासएसु परिहीणदा जो मए अच्चासणा मणसा, वचसा, काएण, कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥९॥

दंसण-वयसामाइय-,पोसह-सचित्त- राइभत्ते य।
बंभारंभपरिग्गह-,अणुमणमुद्दिट्ठ-देसविरदे य ॥1 ॥

एयासु जधा कहिद-पडिमासु पमादाइ-कयाइचार-सोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होउ मज्झं। अरहंत-सिद्ध-आयरिय-उवज्झाय -सव्वसाहु सक्खियं, सम्मत्तपुव्वगं, सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसिओ (राइओ) पडिक्कमणाए सव्वाइचार - विसोहिणिमित्तं, पुव्वाइरियकमेण चउवीस-तित्थयर-भत्ति- कायोत्सर्गं करोमि।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा - अरहंते लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्ज-दीव-दो समुद्देसु पण्णारस-कम्म-भूमिसु, जावअरहंताणं, भयवंताणं आदियराणं, तित्थय-राणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतयडाणं पार-गयाणं, धम्माइरि-याणं, धम्मदेसयाणं, धम्मणायगाणं, धम्म-वर-चाउरंग-चक्क-वट्टीणं, देवाहि-देवाणं, णाणाणं दंसणाणं, चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं।

करेमि भंते! सामाइयं सव्वं सावज्ज-जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचसा काएण, ण करेमि ण कारेमि, ण अण्णं करंतं पि समणुमणामि तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि,

णिंदामि, गरहामि अप्पाणं,जाव अरहंताणं भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

चतुर्विंशतिस्तव:

जीविय मरणे लाहा, लाहे संजोग विप्पजोगे य।
बंधुरिए सुह दुक्खा, दो समदा सामाइयं णाम॥
थोस्सामि हं जिणवरे, तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए, विहुय-रयमले महप्पण्णे ॥१॥
लोयस्सुज्जोय-यरे, धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से, चउवीसं चेव केवलिणो ॥२॥
उसहमजियं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥३॥
सुविहिं च पुप्फयंतं, सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमल-मणंतं भयवं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥४॥
कुंथुं च जिणवरिंदं, अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदामि रिट्ठ-णेमिं, तह पासं वड्ढमाणं च ॥५॥
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमलापहीण-जरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥६॥
कित्तिय वंदिय महिया, एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्ग-णाण-लाहं, दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥७॥

चंदेहिं णिम्मल-यरा, आइच्चेहिं अहिय-पयासंता।
सायरमिव गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥८॥

चौबीस तीर्थंकर भक्ति

चउवीसं तित्थयरे उसहाइ-वीर-पच्छिमे वंदे।
सव्वेसिं गुण-गण-हरे सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥१॥
ये लोकेऽष्ट- सहस्र-, लक्षणधरा, ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्भवजाल-हेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोऽधिका: ॥२॥
ये साध्विन्द्रसुराप्सरो-गण-शतै, र्गीत-प्रणुत्यार्चितास्,
तान्देवान्वृषभादिवीर-चरमान्भक्त्या नमस्याम्यहम् ॥३॥
नाभेयं देवपूज्यं, जिनवरमजितं, सर्वलोक- प्रदीपं,
सर्वज्ञं सम्भवाख्यं, मुनि-गण- वृषभं, नन्दनं देव-देवं ।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं, वरकमल-निभं, पद्मपुष्पाभिगन्धं,
क्षान्तंदान्तं सुपार्श्वं,सकलशशिनिभं,चंद्रनामानमीड॥४॥
विख्यातं पुष्पदन्तं, भवभय-मथनं शीतलं, लोक-नाथं,
श्रेयांसं शील-कोशं, प्रवर-नर-गुरुं, वासुपूज्यं सुपूज्यं।
मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं, विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं, मुनीन्द्रं,
धर्मं सद्धर्मकेतुं, शमदमनिलयं, स्तौमिशान्तिं, शरण्यम् ॥
कुन्थुं सिद्धालयस्थं, श्रमणपतिमरं, त्यक्तभोगेषु चक्रं,
मल्लिं विख्यातगोत्रं, खचरगणनुतं, सुव्रतं सौख्यराशिं।
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरिकुल-तिलकं, नेमिचन्द्रं भवान्तं,
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं, शरणमहमितो, वर्धमानंच भक्त्या॥६॥

इच्छामि भंते! चउवीस- तित्थयर-भत्ति- काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं, पंच-महाकल्लाण-संपण्णाणं, अट्ठ-महा-पाडिहेर-सहियाणं, चउतीसाऽ-तिसयविसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देविंद-मणिमय-मउड-मत्थय-महिदाणं, बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसि-मुणि-जइ-अणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्स-णिलयाणं, उसहाइ- वीर-पच्छिम- मंगल- महा-पुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुणसंपत्ति होउ मज्झं।

दंसण-वय-सामाइय-, पोसह-सचित्तराइभत्ते य।
बंभारंभ-परिग्गह-, अणुमणमुद्दिट्ठ देस- विरदे दे॥

एयासु जधा कहिद-पडिमासु पमादाइक-दादिचार-सोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं। अरहंत-सिद्ध आयरिय- उवज्झाय-सव्वसाहु सक्खियं सम्मत्तपुव्वगंसुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु, मे भवदु, मे भवदु।

अथ देवसिओ (राइओ) पडिक्कमणाए सव्वाइचार-विसोहि-णिमित्तं पुव्वाइरियकमेण आलोयण श्रीसिद्ध भक्ति-पडि-क्कमणभक्ति-णिट्ठिदकरण वीरभक्ति-चउवीस-तित्थयर-भक्ति कृत्वा तद्धीनाधिक-

त्वादिदोष-परिहारार्थं सकल-दोष-निराकरणार्थं सर्वमलातिचार-विशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्री-करणार्थं समाधिभक्तिं काउस्सग्गं करेमि।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

अथेष्ट-प्रार्थना

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।

शास्त्राभ्यासो जिन-पति-नुतिः, सङ्गतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुण- गण-कथा, दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो, भावना चात्म-तत्त्वे,
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे, यावदेतेऽपवर्गः ॥१॥
तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद् यावन् निर्वाण-सम्प्राप्तिः ॥२॥
अक्खर-पयत्थ-हीणं, मत्ताहीणं च जं मए भणियं।
तं खमउ णाणदेव! य, मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ॥३॥

इच्छामि भंते! समाहिभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, रयणत्तय-सरूव-परमप्पज्झाण-लक्खण-समाहिभत्तीए णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं।

❑ ❑ ❑

श्रावक प्रतिक्रमण

(हिन्दी)

श्रावक प्रतिक्रमण रात्रिक/दैवसिक

मैंने प्रमाद वश दोष अनेक कीने,
होते विलीन जिससे वह बोध लेने।
नाना प्रकार भव कर्म विशोध हेतु,
बोलूँ जिनेन्द्र! प्रतिकर्म! सुमोक्ष सेतु।।

उद्देश्य सूत्र

मुझ पापी! मुझ दुष्टि! जड़धी, मायावी लोभी द्वारा।
रागद्वेषवश मलीन मन से, हुए दोष जो दुखकारा।।
हे जिनेन्द्र! त्रैलोक्य पति हे! शिवपथ में अनुराग धरूँ।
आज आपके पादमूल में, निन्दा पूर्वक त्याग करूँ।।

क्षमा सूत्र

क्षमा करूँ मैं सब जीवों को, क्षमा करें सब जीव मुझे।
मैत्री भाव सभी में मेरा, नहीं किसी से वैर मुझे।।

रागत्याग सूत्र

राग द्वेष प्रद्वेष हर्ष औ, दीन भाव उत्सुकता भय।
मोह शोक रति अरति त्यागता, शुद्ध हृदय होकर सविनय।।

पश्चात्ताप सूत्र

हा! हा! जो दुष्कर्म किया है, और किया दुश्चिंतन है।
किया दुष्ट संभाषण मैंने, आज हुआ संवेदन है।।

अन्दर-अन्दर मैं जलता हूँ, कर-कर उसका पश्चात्ताप।
श्री जिनवर के चरण युगल में, आज त्यागता सारे पाप।।
द्रव्य-क्षेत्र व काल भाव मैं, किये कहीं अपराध अधर्म।
शोधनार्थ निंदा गर्हायुत, मन, वच, तन करता प्रतिकर्म।।
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, कहे जीव के विविध प्रकार।
पृथ्वीजलअग्नि वायु तरु, त्रस कायिक यह जीव विचार।।
उत्तापन संताप विराधन, घात किया कारित अनुमत।
मिथ्या हो दुष्कर्म हमारा, यही प्रार्थना भाव सहित।।
दर्शन व्रत सामायिक प्रोषध, सचित्त वर्जन निशि भोजन।
ब्रह्मचर्य आरंभ परिग्रह, अनुमति व्रत उद्दिष्ट त्यजन।।
एकादश इन प्रतिमाओं में कर प्रमाद अतिचार हुए।
उनके शोधन संस्थापन को, पुनः-पुनः यह पाठ किए।।
श्री अरिहंत सिद्ध साक्षी में, सूरिजनों की साक्षी में।
उपाध्याय जिन सर्व साधुगण, श्रमण संघ की साक्षी में।।
अहो! दैवसिक (रात्रिक) प्रतिक्रमण से, सब अतिचार विशोधन हो।
पूर्वाचार्यों के अनुक्रम से, सिद्ध भक्ति सालोचन हो।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्ध मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपण्णात्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णात्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

(तीस मात्रा)

ढाई द्वीप में, दो समुद्र में, पन्द्रह कर्मधराओं मैं।
जितने हैं उन अरिहंतों को, भगवंतों को सुमरूँ मैं।।
तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकरों का, तथा जिनों जिन-उत्तम का।
केवलज्ञानी! सिद्धों-बुद्धों, सिद्धि प्रापक सिद्धों का ।।1 ।।
अंत: कृत केवलियों का भी, तथा सभी भव पारक का।
धर्माचार्यों धर्म देशकों, धर्म नायकों-तारक का।।
धर्म चतुर्विध संघपति का, जिन देवाधि-देवों का।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरिततप, नित कृतिकर्म करूँ इनका ।।2 ।।
हे भगवन्! सामायिक करता, मन वच तन सब पाप तजूँ।
आजीवन मैं किसी पाप को, कृत कारित मत नहीं भजूँ।।3।।
हे भगवन्! इन अतिचारों का, प्रतिक्रमण मैं करता हूँ।
निंदा करता गर्हा करता, गुरु साक्षी में रहता हूँ।।4।।

अरिहंतों की भगवंतों की, करूँ अर्चना जब तक मैं।
पापकर्मको,दुश्चरित्रको,यहाँ त्यागता तब तक मैं।।5।।

(एक कायोत्सर्ग, तीन आवर्त, एक शिरोनति करें।)

(दोहा)

जन्म मरण उत्पाद व्यय, अरु संयोग वियोग।
मित्र शत्रु सुख दौख्य में, हो समता का योग।।1।।
जगत पूज्य नरश्रेष्ठ हे!, अरज अमल धीमान।
जिन तीर्थंकर केवली, गाऊँ मैं गुणगान।।2।।
विश्व प्रकाशक! तीर्थंकर! चौबीसों अरिहंत।
केवलियों का कीर्तन, करूँ रहूँ निर्ग्रन्थ।।3।।
ऋषभाजित संभव नमूँ, अभिनंदन मतिसार।
पद्म सुपारस चंद्र जिन, वन्दूँ योग सम्हार।।4।।
पुष्पदन्त शीतल प्रभो! श्रेयस् वासुपूज्य।
विमलानंत जिनेश नम, धर्म शांति पद पूज्य।।5।।
कुन्थु अर जिनदेव हे!, मल्ली सुव्रत नाथ।
नमि नेमी पारस नमूँ, वर्द्धमान पद माथ।।6।।
इस विध से संस्तुत्य जो, जन्म-मरण मल छिन्न।
तीर्थंकर चौबीस जिन, मुझ पर रहें प्रसन्न।।7।।
कीर्तित वंदित पूज्य ये, लोकोत्तम जिन सिद्ध।
दें अरोगता ज्ञान गुण, बोधि समाधि प्रसिद्ध।।8।।

चंदा से निर्मल अधिक, रवि सम आभावान।
सागर सम गंभीर जिन, सिद्ध सिद्धि दें दान।।9।।
झलकें जिनके ज्ञान में, गोपद सम त्रयलोक।
जिन पद पा रिपु वंद्य हो, उन्हीं वीर पद धोक।।10।।

(सिद्ध भक्ति)

तप से नय से सिद्ध जो, संयम चारित सिद्ध।
ज्ञान दरश से सिद्ध को, शिरसा नमूँ प्रसिद्ध।।

(अञ्चलिका)

मैंने सिद्धभक्ति का भगवन्! सादर कायोत्सर्ग किया।
उसके आलोचन की इच्छा,करता हूँ मैं शुद्ध हिया।।
सम्यग्ज्ञान दरश चारितमय, अष्ट कर्म से मुक्त विभो।
क्षायिकसम्यक्आदि गुणोत्तम,अष्ट गुणोंसेयुक्त प्रभो।।1।।
ऊर्ध्वलोक पर राज रहे हो, तप नय संयम चरित प्रधान।
भूत भविष्यत वर्तमान के, सब सिद्धों को करूँ प्रणाम।।
अर्चन पूजन वंदन करलूँ, नमस्कार हो आठों याम।
दु:खनाश हो कर्मनाश हो, सुगति गमन मेरा भगवान।।2।।
वीर मरण औ जिनगुण सम्पद्, पाऊँ सर्वोत्तम वरदान।
इसीलक्ष्यकी सिद्धि हेतु, सुमरूँ सकल सिद्ध भगवान।।3।।

ग्यारह प्रतिमा

दोहा

पंच उदम्बर फल सहित, सात व्यसन को त्याग।
हो सम्यक्त्व विशुद्ध मति, दर्शन श्रावक जाग।।1।।
पंच अणुव्रत पालता, पाले गुणाव्रत तीन।
शिक्षाव्रत चारों धरें, व्रत प्रतिमा लवलीन।।2।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्य पंच गुरुदेव।
जो वंदे त्रयकाल में, सामायिक व्रत एव।।3।।
उत्तम मध्य जघन्य विध, प्रोषध करो विचार।
आत्म शक्ति अनुसार ही, चार पर्व सुखकार।।4।।
जो सचित्त को त्यागता, तजता पत्र प्रवाल।
अप्रासुक जल बीज तज, पंचम प्रतिमा पाल।।5।।
मन वच तन कृत कारिता, अनुमोदन नव भेद।
तजे दिवस मैथुन वही, श्रावक छठा विवेक।।6।।
नौ प्रकार से सर्वदा, मैथुन का परित्याग।
स्त्री विकथा त्यागता, ब्रह्मचर्य गुण याग।।7।।
थोड़ा हो या बहुत हो, गृहारम्भ सब त्याग।
अष्टम प्रतिमा जानिए, धर गुण में अनुराग।।8।।
वस्त्र मात्र तन शेष रख, सर्व परिग्रह छोड़।
उनमें भी मूर्च्छा तजे, नवमी प्रतिमा जोड़।।9।।

निज घर पर घर काज में, पूछे या बिन पूछ।
अनुमति देना त्यागता, दसवीं प्रतिमा सूझ।।10।।
नवधाविधि से शुद्ध जो, ले भिक्षा आहार।
तजे दीनता भाव को, प्रतिमा ग्यारह सार।।11।।
इस ग्यारहवें थान में, दो विध श्रावक ज्ञान।
खण्ड वस्त्र धारे प्रथम, पर कोपीन विधान।।
तप व्रत आवश्यक नियम, लोच पिच्छिका धार।
अनुप्रेक्षा औ ध्यान धर, कर पात्री आहार।।12।।
इस विधि जो दिन रात में, अनाचार अतिचार।
लगा दोष वह शुद्ध हो, प्रतिक्रमण चितधार।।13।।
सम्यग्दर्शन से सहित मरण होय जिननाथ।
समाधि पण्डित वीरता, श्रेष्ठ मरण के साथ।।14।।
पापनाश, दुख नाश हो, बोधि मिले भगवान।
सुगति गमन सम्यग्मरण, जिन गुण संपद दान।।15।।

(जिनोदय छन्द)

दर्शन व्रत सामायिकप्रोषध, सचित्त वर्जन निशि भोजन।
ब्रह्मचर्य आरंभ परिग्रह, अनुमति व्रत उद्दिष्ट त्यजन।।
एकादश इन प्रतिमाओं में, कर प्रमाद अतिचारहुए।
उनके शोधन संस्थापन को, पुनः पुनः यह पाठ किए।।
श्री अरिहंत सिद्ध साक्षी में, सूरिजनों की साक्षी में।
उपाध्याय जन सर्व साधुगण,श्रमण संघ की साक्षी में।।

पूर्वाचार्यों के सक्रम से, सब कर्मों को क्षय करने।
भाव अर्चना, वन्दन-संस्तव, सालोचन गुणगण वरने ॥1॥

प्रतिक्रमण को संकल्पित हो, निश्चय कायोत्सर्ग करूँ।
सिद्ध स्वभावी निज गुण पाने, णमोकार का ध्यान धरूँ ॥2॥

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

(तीस मात्रा)

ढाई द्वीप में, दो समुद्र में, पन्द्रह कर्मधराओं मैं।
जितने हैं उन अरिहंतों को, भगवंतों को सुमरूँ मैं॥

तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकरों का, तथा जिनों जिन-उत्तम का।
केवलज्ञानी! सिद्धों-बुद्धों, सिद्धि प्रापक सिद्धों का॥1॥

अंतः कृत केवलियों का भी, तथा सभी भव पारक का।
धर्माचार्यों धर्म देशकों, धर्म नायकों-तारक का॥

धर्म चतुर्विध संघपति का, जिन देवाधि देवों का।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित तप, नित कृतिकर्म करूँ इनका।।2।।

हे भगवन्! सामायिक करता, मन वच तन सब पाप तजूँ।
आजीवन मैं किसी पाप को, कृत कारित मत नहीं भजूँ।।3।।

हे भगवन्! उन अतिचारों का, प्रतिक्रमण मैं करता हूँ।
निंदा करता गर्हा करता, गुरु साक्षी में रहता हूँ।।4।।

अरिहंतो की भगवंतों की, करूँ अर्चना जब तक मैं।
पाप कर्म को, दुश्चरित्र को, यहाँ त्यागता तब तक मैं।।5।।

(नौ बार णमोकार जपें तीन आवर्त, एक शिरोनति करें।)

(दोहा)

जन्म मरण अरु आय व्यय, अरु संयोग वियोग।
मित्र-शत्रु सुख दौख्य में, हो समता का योग।।1।।

जगत पूज्य नरश्रेष्ठ हे!, अरज अमल धीमान।
जिन तीर्थंकर केवली, गाऊँ मैं गुणगान।। 2।।

विश्व प्रकाशक! तीर्थंकर! चौबीसों अरिहंत।
केवलियों का कीर्तन, करूँ रहूँ निर्ग्रन्थ।। 3।।

ऋषभाजित संभव नमूँ, अभिनंदन मतिसार।
पद्म सुपारस चंद्र जिन, वन्दूँ योग सम्हार।। 4।।

पुष्पदन्त शीतल प्रभो! श्रेयस् वासुपूज्य।
विमलानंत जिनेश नम, धर्म शांति पद पूज्य।।5।।

कुन्थु अर जिनदेव हे!, मल्ली सुव्रत नाथ।
नमि नेमी पारस नमूँ, वर्द्धमान पद माथ।। 6।।

इस विध से संस्तुत्य जो, जन्म-मरण मल छिन्न।
तीर्थंकर चौबीस जिन, मुझ पर रहें प्रसन्न।।7।।

कीर्तित वंदित पूज्य ये, लोकोत्तम जिन सिद्ध।
दें अरोगता ज्ञान गुण, बोधि समाधि प्रसिद्ध।।8।।

चंदा से निर्मल अधिक, रवि सम आभावान।
सागर सम गंभीर जिन, सिद्ध सिद्धि दें दान।। 9।।

(जिनोदय छन्द)

नमूँ जिनों को, नमूँ जिनों को, नमूँ-नमूँ जिन ऋषियों को।
नमूँ निषद्या, नमूँ निषद्या, नमूँ-नमूँ सब नसियों को।।
नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो जिन भगवन्।
अर्हत्!सिद्ध!बुद्ध!नीरज हे!,निर्मल!सममन!हे शुभमन।।1।।

हे समर्थ! समयोग! समीश्वर!, त्रय शल्यों के नाशक हो।
जग जीवों की शल्य निवारक!,निराग!निर्भय!शासक हो।।
निर्दोषी! निर्मोही! निर्मम!, संग रहित हो, शल्य रहित।
माया मान मृषा के मर्दक!, तप-प्रभावक गुणों सहित।।2।।

शील सिन्धु हे! अनन्तज्ञ हे!, अप्रमेय! महावीर! महान!
वर्द्धमान हे! बुद्धर्षिगण, नमन-नमन करता भगवान।।3।।
अर्हत्! सिद्ध! बुद्ध! जिन! केवलि, अवधि मन: पर्यय ज्ञानी।
चौदह पूर्वों के ज्ञाता मुनि, श्रुतधर! श्रुत! दें श्रुतज्ञानी।।
द्वादश विध तप और तपस्वी, गुण चौरासी लक्ष गुणी।
पूज्य महर्षि ऋद्धिधारी मुनि, तीर्थ! तीर्थंकर दिव्य ध्वनि।।4।।
प्रवचनदाता ज्ञान ज्ञानधर, दर्शन तथा दर्शनी भी।
बारह संयम तथा संयमी, विनय विनयधर विनय विधि।।
ब्रह्मवास औ ब्रह्मचारी गण! गुप्ति गुप्तियों के पालक।
मुक्त परिग्रह मुक्तवंत हो, समिति! समितियों के धारक।।5।।
निज पर समय शास्त्र के ज्ञाता, क्षमा क्षमा गुण धारक हे!
क्षपक श्रेणी पर आरोहक हे!, क्षीणमोह गुण कारक हे!।।
बोधिवंत हे! बुद्धिमंत हे!, चैत्यवृक्ष औ चैत्यालय।
ये सब होवे मंगलदायक, मंगलकारक शुभ आलय।।6।।
ऊर्ध्वलोक के मध्यलोक के, अधोलोक के सिद्ध सदन।
सब सिद्धों की सिद्धि भूमियाँ, पूजूँ-वन्दू कर दर्शन।।
अष्टापद सम्मेद शिखर जी! ऊर्जयन्त चम्पापुर जी।
पावापुर व नगर अयोध्या, क्षेत्र हस्तिनापुर वर जी।।7।।
और जहाँ भी जो कोई भी, सिद्ध निषद्या स्थल हैं।
जीव लोक में ढाई द्वीप में, दो समुद्र में शिव थल हैं।।

ईषत् प्राग् भार पृथ्वी पर, सिद्धों-बुद्धों को वन्दन।
कर्मबंध से मुक्त जिनेश्वर, नीरज निर्मल सिद्ध नमन।।8।।
आचार्य श्री जी! उपाध्याय जी! संघ प्रवर्तक! गणधर जी।
पूज्य स्थविर गुरुदेव जी! संघ चतुर्विध मुनिवर जी।।
भरतैरावत दस क्षेत्रों में, पंच विदेहक क्षेत्रों में।
और-और जो मनुष लोक में, साधु संयमी तीर्थों में।।9।।
परम तपस्वी ये सब मेरा, मंगलमय मंगल कर दें।
भाव शुद्धि से इन्हें नमूँ मैं, आत्म शुद्धि मुझमें भर दें।
सब सिद्धों को नमस्कार कर, अञ्जली माथे पे धरके।
मन वच तन से नमस्कार हो, मंगल भाव सजा करके।।10।।

दर्शन प्रतिमा

(मानव छंद)

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
पहिली दर्शन प्रतिमा में, श्रावक व्रत की महिमा में।।
शंका कांक्षा करने से, घृणा भावना धरने से।
परमत की अनुशंसा से, अथवा संस्तव शंसा से।।
मेरे द्‌वारा निशि दिन में, दोष हुए व्रत पालन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।
दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

व्रत प्रतिमा अहिंसा-अणुव्रत

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, प्रथम अहिंसा अणुव्रत में।।

वध बंधन छेदन द्वारा, अति भारा रोपण द्वारा।
अन्न पान के रोधन से, भोजन-पान निरोधन से।।

मेरे द्वारा निशि दिन में, दोष हुए व्रत पालन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

सत्य अणुव्रत

प्रतिक्रमण करताभगवन्! करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, दूजे सत्य अणुव्रत में।।

मिथ्या वचन सुनाने से, गुप्त क्रिया प्रकटाने से।
कूट लेख के करने से, पर का द्रव्य हड़पने से।।

पर अभिप्राय बताने में,मेरे द्वारा निश-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए , मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

अचौर्य अणुव्रत

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, नाथ! अचौर्य अणुव्रत में।।

चौर्य प्रयोग बताया हो, चौर्य द्रव्य को पाया हो।
शासन के विपरीत कदम, हीनाधिक मानोन्मनन।।

प्रतिरूपकव्यवहार किया, जो निश-दिन में दोष किया।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

ब्रह्मचर्याणुव्रत

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में। चौथे ब्रह्मचर्य व्रत में।।

पर विवाह की करण क्रिया,या इत्वरिका गमन क्रिया।
परिग्रहीता अग्रहीता, अनंगक्रीडा अनुभूता।।

प्रतिरूपक व्यवहार किया, जो निश-दिन में दोष किया।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

अपरिग्रहाणुव्रत

प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, पंचम अणुव्रत पालन में।।

क्षेत्र वास्तु सीमा लांघी, धन्य-धान्य सीमा लांघी।
सोना-चाँदी जड़ अतिक्रम, दासी-दास जीव अतिक्रम।।

वस्त्र और वर्तन अतिक्रम, मेरे द्‌वारा जो निश-दिन।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

दिग्विरित

प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, पहले गुणव्रत पालन में।।

ऊर्ध्व गमन सीमा लांघी, अधोगमन सीमा लांघी।
तिर्यग् गमन सीमा लांघी, बाँधी मर्यादा लांघी।।

भूल गया मर्यादा में, मेरे द्वारा निश-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

देशविरति

प्रतिक्रमण करता भगवन्! करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, दूजे गुणव्रत पालन में।।

सीमा तज कुछ लाया हो, भेजा और भिजाया हो।
या कुछ शब्द इशारे से, या कुछ रूप सहारे से।।

करके पुद्गल क्षेपण में, मेरे द्वारा निशि-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

अनर्थदण्ड विरति

प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, तीजे गुणव्रत पालन में।।

खो विवेकअति हँसने से, खोटे भाषण या तन से।
अरे व्यर्थ में बोल दिया, बिना विचारे कार्य किया।।

निष्प्रयोज्य के संचय में, मेरे द्वारा निश-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

शिक्षाव्रत

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, पहले इस शिक्षाव्रत में।।
प्रथमेन्द्रिय भोगातिक्रम, रसनेन्द्रिय भोगातिक्रम।
घ्राणेन्द्रिय भोगातिक्रम, नयनेन्द्रिय भोगातिक्रम।।
कर्णेन्द्रिय भोगातिक्रम, मेरे द्वारा कर-निश-दिन।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।
दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।
प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, दूजे इस शिक्षाव्रत में।।
प्रथमेन्द्रिय से कर्णेन्द्रिय, अतिक्रमहुई सभी इन्द्रिय।
जब से निजपद ध्यान किया, परिभोग परिमाण किया।।
अरे उसे भी त्याग दिया, सदा अहर्निश पाप किया।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।
दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।
प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में, तीजे इस शिक्षा व्रत में।।

जो सचित्त में रखा हुआ, या सचित्त से ढका हुआ।
अथवा पर के कहने से, या फिर समय उल्लंघन से।

मत्सर भाव जगा मन में, मेरे द्वारा निश-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
व्रत प्रतिमा के धारण में। चौथे इस शिक्षा व्रत में।।

जीने की कांक्षा की हो,मरने की वांछा की हो।
मित्र राग अपनाया हो, सुख अनुबन्ध बढ़ाया हो।।

या निदान करके मन में, मेरे द्वारा निश-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

सामायिक प्रतिमा

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
सामायिकप्रतिमा व्रत में, दोष हुए जो निज व्रत में।।

निज मन के दुश्चिंतन से, वचनों के उच्चारण से।
अथवा चंचल हो तन से, कभी अनादर मय मन से।।

शुद्ध पाठ विसराने में, मेरे द्वारा निशि-दिन में।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।
दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

प्रोषध प्रतिमा

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
चौथी प्रोषध प्रतिमा में, श्रावक व्रत की महिमा में।।
भू शोधे बिन मल त्यागे, बिन शोधेउपकरण लिए।
बिन भू शोधे वस्तु धरी, या बिन शोधे ग्रहण करी।।
कर्त्तव्यों में कमी रखी, याद भक्तियाँ नहीं रहीं।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।
दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

सचित्त-त्याग प्रतिमा

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
पंचम प्रतिमा धारण में, त्याग सचित्ता पालन में।।
पृथ्वी जल तेजस वायु, जीव असंख्य असंख्य विभो।
नंतानंत वनस्पतियाँ, हरित बीज अंकुर क्षतियाँ।।
उत्तापन परितापन से, अथवा जीव विराधन से।
मुझ से जो उपघात हुआ, कृत कारित अनुमोद हुआ।।

वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, निष्फल होवे हे श्री जिन!।।
बस इतना वरदान वरो पंचम प्रतिमा दान करो।।

रात्रि-भोजन त्याग प्रतिमा

प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
रात्रि भुक्ति प्रतिमा धारण, षष्ठम् प्रतिमा का पालन।।

ब्रह्मचर्य व्रत दिन-दिन का, पालन करना गुण निज का।
नवधाविधि व्रत असिधारा, हुए दोष कुछ अतिचारा।।

चंचल हो मन वच तन से,कृत कारित अनुमोदन से।
अनाचार अतिचार हुए, मन वच तन आधार हुए।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्!, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

ब्रह्मचर्य प्रतिमा

प्रतिक्रमण करताभगवन्!, करने अपने दोष शमन।
सप्तम प्रतिमा धारण में, ब्रह्मचर्य के पालन में।।

रमा कथा के करने में, सुनने और सुनाने में।
मनहर अंग निरीक्षण से, पूर्व भोग के सुमरण से।।

या गरिष्ट रस खाने से, अथवा देह सजाने से।
मेरे द्वारा निशदिन में, दोष हुए व्रत पालन में।।

चंचल हो मन वच तन से, कृतकारित अनुमोदन से।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

आरम्भ-त्याग प्रतिमा

प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
अष्टम प्रतिमा धारण में, आरंभी तज पालन में।।

चित्त कषायों के वश हो, अथवालालच के रस हो।
पाप कर्म में लीन हुआ, सदा कषायाधीन हुआ।।

मेरे द्वारा जीवन भर, हुए विराधन त्रस थावर।
चंचल हो मन वच तन से, कृत कारित अनुमोदनसे।

मेरे द्वारा निश दिन में, दोष हुए व्रत पालन में।
दुष्कृत हो मिथ्या भगवन्!, वीतराग पद नमन नमन।।

परिग्रह त्याग प्रतिमा

प्रतिक्रमणकरता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
नौवी प्रतिमा धारण में, तजपरिग्रह व्रत पालन में।।

वस्त्र मात्र मर्यादा रख, शेषपरिग्रह सबकुछ तज।
ममता मूर्च्छा त्यागा जो, कभी राग वश चाहा हो।।

परधन में परिधानों में, हानि हुई परिणामों में।
चंचल हो मन वच तन से, कृत कारित अनुमोदनसे।।

मेरे द्वारा निशदिन में, दोष हुए व्रत पालन में।
दुष्कृत हो मिथ्या भगवन्!, वीतराग पद नमन नमन।।

अनुमति त्याग प्रतिमा

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।।
अनुमति प्रतिमा पालन में, दशवीं प्रतिमा धारण में।।

कभी किसी ने कुछ पूछा, अथवा भले नहीं पूछा।
अनुमति हो मेरे द्वारा, पाप कर्म वह दुखकारा।।

चंचल हो मन वचतन से, कृत कारित अनुमोदन से।
मेरे द्वारा निशि-दिन में, दोष हुए व्रत पालन में।।

दुष्कृत किया कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।
वह मेरा दुष्कृत भगवन्, मिथ्या होवे हे श्री जिन!।।

उद्दिष्ट-त्याग प्रतिमा

प्रतिक्रमण करता भगवन्!, करने अपने दोष शमन।
अब उद्दिष्टत्याग प्रतिमा, सर्व श्रेष्ठ श्रावक महिमा।।

दोष पूर्ण आहार जहाँ, किया कदाचित् कभी वहाँ।
अथवा स्वयं पकाया हो, आज्ञा दे पकवाया हो।।

यदि ऐसा आहार किया, या करने का भाव हुआ।
अथवा अन्य कराया हो, या अनुमोदन भाया हो।।

चंचल हो मन वच तनसे, कृत कारित अनुमोदनसे।
दुष्कृत हो मिथ्या भगवन्!, वीतराग पद नमन नमन।।

(निर्ग्रन्थ भावना)

हे भगवन्! मैं करूँ कामना, सदा-सदा निर्ग्रंथ रहूँ।
नित भाऊँ निर्ग्रंथ भावना, निर्ग्रंथों का पंथ गहूँ।।1।।

अहो धन्य निर्ग्रंथ दशा ये, जीवित जागृत प्रवचन है।
इससे दूजा अन्य न कोई, यही अनुत्तर जीवन है।।
केवलियों द्वारा प्रतिपादित, पूर्णतया नैकायिक है।
प्रायश्चित तप से विशुद्ध यह, पूर्ण शुद्ध सामायिक है।।2।।

शल्यवान की शल्य मिटाकर, निशल्य निर्भय बनारहा।
सिद्धि मार्ग क्या? श्रेणी मार्ग क्या? मुक्ति मार्ग भी बता रहा।।
क्षमा मार्ग पर सदा चलाता, अपरिग्रह का पंथ कहा।
मोक्षमार्ग या परममोक्ष पथ, चले दिगम्बर संत अहा।।3।।

निर्यान मार्ग निर्वाण मार्ग, सब दुख हर्ता, सुख मार्ग मही।
पूर्णरूप सम्यक् चारित से, शीघ्र दिलाता मोक्ष-मही।।
निर्विवाद यह परम सत्य है, मोक्षार्थी आश्रय लेते।
जिनमुद्रा ही जिन प्रवचन है, श्रद्धा से हम अपनाते।।4।।

साधु मार्ग की रुचि करता हूँ, साधु मार्ग ही रुचे मुझे।
अन्तर्मन से चाहूँ मुनिपद, भव-भव मुनि पद मिले मुझे।।
मुनि मुद्रा से बढ़कर कोई, अन्य भिन्न शिवमार्ग नहीं।
ना था, ना है, नाहीं होगा, तीन काल में कभी-कहीं।।5।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से, सूत्र शास्त्र परमागम से।
परम पूज्य निर्ग्रंथ लिंग से, स्वात्म सिद्धि हो मुनिपन से।।
बुद्धि प्राप्त हो, मुक्ति प्राप्त हो, पूर्ण सुखी कृत्कृत्य बनें।
सर्व दुखों के नाशक होकर, विश्व वेदि सर्वज्ञ बनें।।6।।

साधु-श्रमण होता हूँ भगवन्!, मैं ही संयत होता हूँ।
तपरत होता उपरत होता, शान्त संत मैं होता हूँ।।
उपधि वंचना मानी माया, असत्य मूर्च्छा भव तजूँ।
मिथ्यादर्शन मिथ्याबुध तज, मिथ्याचारित तजूँ-तजूँ।।7।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित में, सम्यक् श्रद्धा करता हूँ।
जिनवर प्रतिपादित तत्त्वों में, निश्चल श्रद्धा धरता हूँ।।
इस प्रकार से दिन रजनी में, मुझसे जो भी दोष हुआ।
उस सम्बन्धी दोष हमारा, प्रतिक्रमण से हो मिथ्या।।8।।

हे भगवन्! मैं इच्छा करता, प्रतिक्रमण आलोचन की।
दिन-रजनी में दोष हुए जो, उन सब दोष विमोचन की।।9।।

अनाचार-अतिचार हुआ हो, अनाभोग-आभोग हुआ।
कायिक वाचिक और मानसिक, दुराचरण दुर्वचन हुआ।।10।।

अष्टकर्म की नाशनहारी, क्रियाचरण में दोष हुए।
अन्य-अन्य जो दोष हुए हों, श्वास-श्वास में दोष हुए।।
नयन खोलने, नयन मूँदने, नयन दृष्टि के चलाचलन।
खाँसी, छींक, जँभाई अथवा सूक्ष्म अंग के संचालन।।11।।

इसी तरह की अन्य क्रिया में, असमाधि को प्राप्त हुआ।
दोष लगाया सदाचार में, अब तक नहीं समाप्त हुआ।।
अर्हन्तों की भगवंतों की, जौं लौं करूँ उपासन में।
तौं लौं त्यागूँ पाप कर्म को, दुराचरण पद पावन में।।12।।
दर्शन व्रत सामायिक प्रोषध, सचित्त वर्जन निशि भोजन।
ब्रह्मचर्य आरंभ परिग्रह अनुमति व्रत उद्दिष्ट त्यजन।।
एकादश इन प्रतिमाओं में कर प्रमाद अतिचार हुए।
उनके शोधन संस्थापन को,पुनः-पुनः यह पाठ किए।।13।।
दिवस रात में लगे हुए उन,सब अतिचार विशोधन को।
पूर्वाचार्यों के अनुक्रम से, वीर भक्ति जिन भगवन् हो।।
काया से ममता को तजकर, निर्मल कायोत्सर्ग करु।
महामन्त्र के पाँच पदों को,आत्म ध्यान में नित सुमरुँ।। 14 ।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

(तीस मात्रा)

ढाई द्वीप में, दो समुद्र में, पन्द्रह कर्मधराओं मैं।
जितने हैं उन अरिहंतों को, भगवंतों को सुमरूँ मैं।।
तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकरों का, तथा जिनों जिन-उत्तम का।
केवलज्ञानी! सिद्धों-बुद्धों, सिद्धि प्रापक सिद्धों का।।1।।
अंत:कृतकेवलियों का भी, तथा सभी भव पारकका।
धर्माचार्यों धर्म देशकों, धर्म नायकों-तारक का।।
धर्म चतुर्विध संघपति का, जिन देवाधि देवों का।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित तप, नित कृतिकर्म करूँ इनका।।2।।
हे भगवन्! सामायिक करता, मन वच तन सब पाप तजूँ।
आजीवन मैं किसी पाप को, कृत कारित मत नहीं भजूँ।।3।।
हे भगवन्! उन अतिचारों का, प्रतिक्रमण मैं करता हूँ।
निंदा करता गर्हा करता, गुरु साक्षी में रहता हूँ।।4।।
अरिहंतो की भगवंतों की, करूँ अर्चना जब तक मैं।
पाप कर्म को, दुश्चरित्र को, यहाँ त्यागता तब तक मैं।।5।।

(दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण हो तो छत्तीस बार णमोकार मंत्र का जाप करें। तथा रात्रि सम्बन्धी हो तो अठारह बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोहा)

जन्म-मरण अरु आय-व्यय, अरु संयोग-वियोग।
मित्र शत्रु सुख दौख्य में, हो समता का योग।।

जगत पूज्य नरश्रेष्ठ हे!, अरज अमल धीमान।
जिन तीर्थंकर केवली, गाऊँ मैं गुणगान।।1।।

विश्व प्रकाशक! तीर्थंकर!, चौबीसों अरिहंत।
केवलियों का कीर्तन, करूँ रहूँ निर्ग्रन्थ।।2।।

ऋषभाजित संभव नमूँ, अभिनंदन मतिसार।
पद्म सुपारस चंद्र जिन, वन्दूँ योग सम्हार।।3।।

पुष्पदन्त शीतल प्रभो!, श्रेयस् वासूपूज्य।
विमलानंत जिनेश नम, धर्म शांति पद पूज्य।।4।।

कुन्थु अर जिनदेव हे!, मल्ली सुव्रत नाथ।
नमि नेमी पारस नमूँ, वर्द्धमान पद माथ।।5।।

इस विध से संस्तुत्य जो, जन्म-मरण मल छिन्न।
तीर्थंकर चौबीस जिन, मुझ पर रहें प्रसन्न।।6।।

कीर्तित वंदित पूज्य ये, लोकोत्तम जिन सिद्ध।
दें अरोगता ज्ञान गुण, बोधि समाधि प्रसिद्ध।।7।।

चंदा से निर्मल अधिक, रवि सम आभावान।
सागर सम गंभीर जिन, सिद्ध सिद्धि दें दान।।8।।

वीरभक्ति

जो सब चेतन जड़ द्रव्यों को, उनके सर्वगुणों को भी।
भूत-भविष्यत वर्तमान की, सदा-सदा पर्याय सभी।।
युगपद् जानें समय-समय में, वे सर्वज्ञ कहाते हैं।
उन सर्वज्ञ वीर जिनवर को, हम सब शीष झुकाते हैं।।1।।

वीर सदा सुर असुर प्रपूजित, वीर शरण बुधजन आते।
वीरदेव ने कर्म नशाये, वीर नमूँ श्रद्धा लाके ।।
वीरदेव से तीर्थ चला यह, वीरप्रभु का तप अद्भुत।
वीरप्रभु में श्रीद्युति सब गुण, अहो वीर कल्याणक युत।।2 ।।

संयम योग सहित जो भविजन, प्रतिदिन जिन पद ध्यान धरें।
सादर सविनय भक्ति भाव से, वीर पदों में नमन करें।।
वे ही भव्य पुरुष इस जग में, शोक रहित हो जाते हैं।
महाभयानक भव अटवी से, स्वयं पार पा जाते हैं।।3 ।।

व्रत समूह जिसकी जड़ जानो, संयम जिसका बंधन है।
नीर-नियम यम से परिवर्द्धित, शाखा शील प्रबंधन है।।
समिति रूप कलिकाएँ जिसमें, तीन गुप्तियाँ कोंपल हैं।
गुण पुष्पों से महक रहा है, तपो पत्र शुभ चंचल हैं।।4 ।।

मोक्ष महाफल देने वाला, दया धर्म की छाँव घनी।
शुभ उपयोगी पंथीजन का, खेद मिटाने महा-धनी।।
पाप रूप दिनकर से उपजा, महाताप भी नाश करें।
चारित रूपी वृक्ष हमारे, भव अनंत का नाश करें।।5 ।।

जिस चरित्र का सर्व जिनों ने, स्वयं आचरण सदा किया।
उस चरित्र का सब शिष्यों को, मंगलमय उपदेश दिया।।
पंच भेद मय उस चरित्र को, नमस्कार मैं करता हूँ।
पंचम चारित कब प्रकटाऊँ, यही भावना धरता हूँ।।6 ।।

धर्म सुखाकर हितकर जानो, सुधी धर्म संचय करते।
धर्म साधकर शिव सुख पाते,धर्म नमन हम सब करते।।
धर्म से दूजा मित्र न कोई, दया धर्म की जड़ मानो।
सदा धर्म में चित्त रमाऊँ, अहो धर्म पालन आनो।।7।।

धर्म अहिंसा संयम तप है, यही श्रेष्ठतम मंगल है।
उसको देव नमन करते जो, सदा धर्म मन उज्ज्वल है।।
अत: धर्म को धारण कर लो, हो पवित्र जिन आत्म प्रदेश।
जिओ और जीने दो सबको, महावीर का शुभ संदेश।।8।।

अंचलिका

हे भगवन्! मैं इच्छा करता, वीर भक्ति आलोचन हो।
कायोत्सर्ग करूँ मैं प्रभुवर, उन सब दोष विमोचन को।।
देशाश्रय आसन आश्रय से, स्थानादिक आश्रय से।
कालाश्रय मुद्रा आश्रय से, कायोत्सर्गी आश्रय से।।
नमस्कार विधि के आश्रय से, अथवा आवर्तादिक हो।
प्रतिक्रमण में षट्कर्मों में, आसादन या त्रुटि हुई हो।।
मन वच तन से करी करायी, अथवा अनुमोदन की हो।
उस सम्बन्धी दोष हमारा, पाप शीघ्र ही मिथ्या हो।।
दर्शन व्रत सामायिक प्रोषध, सचित्त वर्जन निशि भोजन।
ब्रह्मचर्य आरंभ परिग्रह अनुमति व्रत उद्दिष्ट त्यजन।।
एकादश इन प्रतिमाओं में कर प्रमाद अतिचार हुए।
उनके शोधन संस्थापन को, पुन:-पुन: यह पाठ किए।।

रात-दिवस प्रतिकर्म क्रिया में, किए दोष के नाशन को।
पूर्वाचार्यों के अनुक्रम से, सब अतिचार विशोधन को।।
भव भक्ति पूजा वंदन युत, तीर्थंकर थुति पाठ विमल।
कायोत्सर्ग सहित मैं करता, शुद्ध भावना से प्रतिपल।।8।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरहंता, मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

(तीस मात्रा)

ढाई द्वीप में, दो समुद्र में, पन्द्रह कर्म धराओं मैं।
जितने हैं उन अरिहंतों को, भगवंतों को सुमरूँ मैं।।
तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकरों का, तथा जिनों जिन-उत्तम का।
केवलज्ञानी! सिद्धों-बुद्धों, सिद्धि प्रापक सिद्धों का।।1।।
अंतःकृत केवलियों का भी, तथा सभी भव पारक का।
धर्माचार्यों धर्म देशकों, धर्म नायकों-तारक का।।
धर्म चतुर्विध संघपति का, जिन देवाधि-देवों का।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित तप,नित कृतिकर्म करूँ इनका।।2।।

हे भगवन्! सामायिक करता, मन वच तन सब पाप तजूँ।
आजीवन मैं किसी पाप को, कृत कारित मत नहीं भजूँ।।3।।

हे भगवन्! उन अतिचारों का,प्रतिक्रमण मैं करता हूँ।
निंदा करता गर्हा करता, गुरु साक्षी में रहता हूँ।।4।।

अरिहंतो की भगवंतों की, करूँ अर्चना जब तक मैं।
पाप कर्म को, दुश्चरित्र को, यहाँ त्यागता तब तक मैं।।5।।

(नौ बार णमोकार जपें, तीन आवर्त, एक शिरोनति करें।)

(दोहा)

जगत-मरण अरु आय-व्यय, अरु संयोग-वियोग।
मित्र शत्रु सुख दौख्य में, हो समता का योग॥

जगत पूज्य नरश्रेष्ठ हे!, अरज अमल धीमान।
जिन तीर्थंकर केवली, गाऊँ मैं गुणगान।।1।।

विश्व प्रकाशक! तीर्थंकर! चौबीसों अरिहंत।
केवलियों का कीर्तन, करूँ रहूँ निर्ग्रन्थ।।2।।

ऋषभाजित संभव नमूँ, अभिनंदन मतिसार।
पद्म सुपारस चंद्र जिन, वन्दूँ योग सम्हार।।3।।

पुष्पदन्त शीतल प्रभो!, श्रेयस् वासूपूज्य।
विमलानंत जिनेश नम, धर्म शांति पद पूज्य।।4।।

कुन्थु अर जिनदेव हे!, मल्ली सुव्रत नाथ।
नमि नेमी पारस नमूँ, वर्द्धमान पद माथ।।5।।

इस विध से संस्तुत्य, जो, जन्म-मरण मल छिन्न।
तीर्थंकर चौबीस जिन, मुझ पर रहें प्रसन्न।।6।।

कीर्तित वंदित पूज्य ये, लोकोत्तम जिन सिद्ध।
दें अरोगता ज्ञान गुण, बोधि समाधि प्रसिद्ध।।7।।

चंदा से निर्मल अधिक, रवि सम आभावान।
सागर सम गंभीर जिन, सिद्ध सिद्धि दें दान।।8।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्ति
(दोहा)

आदिनाथ को आदि कर, महावीर पद अन्त।
तीर्थंकर गणधर श्रमण, नमूँ सिद्ध पर्यन्त।।1।।

एक हजार आठ लक्षण धर!, ज्ञेयोदधि के पार गये।
भव छेदन के सम्यक् साधन, सूर्य चन्द्र से अधिक भये।।
साधु इन्द्र सुर शत-शत शचियाँ, गुण का अर्चन करते हैं।
आदिनाथ से महावीर तक, उन सबको हम नमते हैं।।1।।

देव पूज्य श्री आदि जिनेश्वर!, विश्व प्रकाशक दीप अजित।
संभव जिन सर्वज्ञ कहाते, अभिनन्दन आनंद सहित।।
कर्म विनाशक सुमतिनाथ हे!, पद्म प्रभ हो पद्म समान।
इन्द्रिय जेता क्षमी सुपारस!, चन्द्र चन्द्र सम गाऊँ गान।।2।।

पुष्पदन्त विख्यात जगत में, भव भय नाशक शीतल जिन।
शील खजाने श्रेयस् जिनवर!, नरगुरु वासुपूज्य अर्चन।।
इन्द्रिय अश्व दमी विमलेश्वर!, अनंत ऋषिवर मुनिवर हो।
सत्य धर्म की ध्वजा धर्म हो ,शान्ति निलय शान्तिश्वर हो ।।3 ।।

कुन्थुनाथ सिद्धालय राजे, भोगचक्र तज अरजित हे।
प्रसिद्ध गोत्री मल्लिनाथ हे!,खचर नमित मुनि सुव्रत हे!।।
देवेन्द्रों से पूज्य नमीश्वर, पारस पूज्य फणीश्वर से।
वर्द्धमानकी शरण में जाता, भक्ति भाव अन्तर्मन से।।4 ।।

(अंचलिका)

तीर्थंकर चउवीस भक्ति का, मैंने कायोत्सर्ग किया।
उसके आलोचन की इच्छा, करता हूँ मैं शुद्ध हिया।।
पंच महाकल्याणों से युत, आठ महा प्रतिहार्य सहित।
चौतीसों अतिशय संशोभे, तीर्थंकर चौबीस सतत्।।1 ।।

मणिमय मुकुटों से शोभायुत, सुर गण माथ झुकाते हैं।
वासुदेव बलदेव चक्रधर, ऋषिगण शीष बिठाते हैं।।
लाखों संस्तुतियों के द्वारा, संस्तवेय की संस्तुति कर।
आदिनाथ से महावीर तक, तीर्थंकर के नाम सुमर।।2 ।।

नित्य काल मैं अर्चा करता, पूजा, वन्दन करता हूँ।
भक्ति भाव से महा-चाव से, नमस्कार मैं करता हूँ।।
दु:ख नाश हों, कर्मनाश हा, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
मरण समाधि चाहूँ भगवन्!,जिनगुण सम्पद् हो भगवन्।।3 ।।

दर्शन व्रत सामायिक प्रोषध, सचित्त वर्जन निशि भोजन।
ब्रह्मचर्य आरंभ परिग्रह अनुमति व्रत उद्दिष्ट त्यजन।।
एकादश इन प्रतिमाओं में कर प्रमाद अतिचार हुए।
उनके शोधन संस्थापन को, पुनः-पुनः यह पाठ किए।।4।।

अब मैं उन सब अतिचारों की, शुद्धि हेतु मेरे प्रभुवर।
दिन-रजनी प्रतिकर्म क्रिया के, दोष हटाने हे गुरुवर!।।
पूर्वाचार्यों के अनुक्रम से, सब कर्मों के क्षय हेतु।
भावअर्चना, भाववंदना, भाव भक्ति शिव सुख सेतु।।5।।

सिद्ध भक्ति प्रतिकर्म भक्ति ओ, वीर भक्ति को गा-गाकर।
तीर्थंकर चौबीस भक्ति को, विनय सहित उच्चारण कर।।
भक्ति भाव में होने वाले, हीनाधिक जो दोष हुए।
उन दोषों को दूर हटाने, नाथ आपकी शरण लिए।।6।।

आत्म शुद्धि के लिए प्रभुवर!, भक्ति समाधि अपनाऊँ।
कायोत्सर्ग करूँ मैं उसका, णमोकार को नित ध्याऊँ।।7।।

(समाधि भक्ति)

शास्त्रों का अभ्यास सदा हो, जिनपद भक्ति मिले।
सन्तजनों का मिले समागम, चारित श्रमण मिले।।
दोष कथन में मौन धरूँ नित, हित-मित वचन कहूँ।
जौ लौं शिवपद ना मिल जाये, तौ लौं शरण लहूँ।।1।।

रुचि हमारी हो जिनमत में, जिनपथ सदा रुचे।
नाथ कुपथ से मुझे बचाना, सत्पथ सदा जचे।।

जिनगुण गायन में मति मेरी, निर्मल बनी रहे।
माँ जिनवाणी सदा हमारे, भव-भव साथ रहे।।2।।

तेरे चरण कमल द्वय भगवन्! रहे हृदय मेरे।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे।।
तौं लौं तव पद रहे हृदय में, जौं लौं शिवपद हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।3।।

अक्षर पद मात्रा अर्थों से, जो कुछ हीन कहा।
क्षमा करो जिनराज आप ही, मागूँ क्षमा अहा।।
ऐसा निर्मल ज्ञान हमें दो, भक्ति करूँ तेरी।
दुःख नाश हों मेरे भगवन्! हो समाधि मेरी।।4।।

अञ्चलिका

भक्ति समाधि करके मैंने, निर्मल कायोत्सर्ग किया।
उसके आलोचन की इच्छा, करता हूँ मैं शुद्ध हिया।।
रत्नत्रय है स्वरूप जिसका, आत्म ध्यान वह कहलाता।
श्रेष्ठ समाधि का शुभ लक्षण, शुद्ध समाधि फल दाता।।1।।

उसी समाधि भक्ति की मैं, प्रतिपल अर्चा करता हूँ।
पूजा करता, वन्दन करता, नमस्कार मैं करता हूँ।।
दुःख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
मरण समाधि पाऊँ भगवन्! जिन गुण सम्पद् हो भगवन्।।2।।